62वीं त्रिमूर्ति शिव जयन्ती के
शुभ अवसर पर –

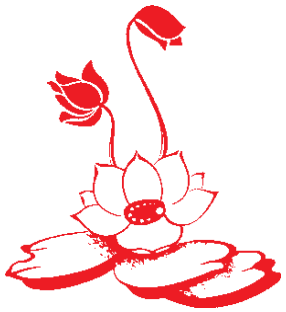

# अव्यक्त शिक्षायें–
# अनमोल रतन

**प्रथम मुद्रण :**
फरवरी, 1998
**प्रतियाँ :**
15000

**प्रकाशक :**
प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय, आबू पर्वत

**मुद्रक :**
ओम् शान्ति प्रैस,
शान्तिवन, आबू रोड
फोन नं. 22678, 23339

बाबा का फोटो

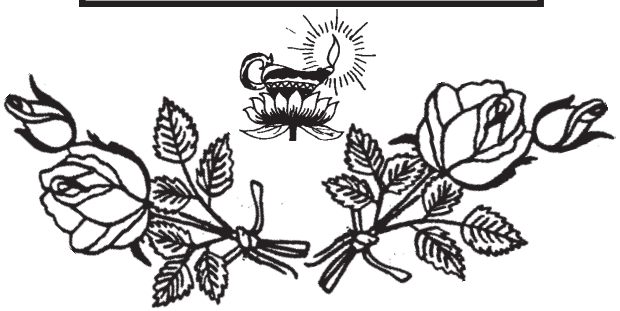

**शिव जयन्ती सो गीता जयन्ती की मुबारक हो – मुबारक हो!**

**सर्व बच्चों प्रति बापदादा की शुभ आशायें –**
**62 वीं त्रिमूर्ति शिव जयन्ती**
**के उपलक्ष्य में**

1- अपने श्रेष्ठ भाग्य की रेखाओं को सदा इमर्ज रखो तो पुराने स्मृतियों की, संस्कारों की रेखायें मर्ज हो जायेंगी।

2- संगमयुग पर हर समय प्राप्तियों के प्रालब्ध स्वरूप का अनुभव करो। भविष्य की प्रालब्ध इस पुरुषार्थ के प्रालब्ध की परछाई है।

3- रहमदिल बन अब हर आत्मा को गुणों और शक्तियों का सहयोग देने वाले फ़राख़दिल मास्टर दाता, महा सहयोगी बनो।



4- समय की गति प्रमाण, ड्रामा के नियम प्रमाण अभी सबकी वानप्रस्थ अवस्था समीप है इसलिए बचपन के अलबेलेपन की बातों को, छोटे-छोटे दागों को समाप्त कर बेदाग बनो।

5- अब 9 लाख आत्मायें तैयार करने के लिए महान दाता, बेहद के दाता, विश्व कल्याणकारी बनो। हदों को समाप्त करो।

6- अब मनोबल को बढ़ाओ। बेहद की वृत्ति से, मनोबल द्वारा विश्व के गोले के ऊपर, बाप के साथ परमधाम की स्थिति में स्थित हो यह सेवा करो तो इसकी प्रालब्ध कई गुणा ज्यादा मिलेगी।

7- अब छोटी-छोटी बातों को छोड़ो, ऊंचे जाओ। मन्सा सेवा के अभ्यासी बन विशेष प्रालब्ध स्वरूप का साक्षात्कार स्वयं भी करो और दूसरों को भी कराओ।

8- प्युरिटी के साथ-साथ चेहरे और चलन में रूहानियत की पर्सनैलिटी को धारण कर, इस ऊंची पर्सनैलिटी के रूहानी नशे में रहो।

9- अपनी रूहानी पर्सनैलिटी को स्मृति में रख सदा प्रसन्नचित रहो तो सब प्रश्न समाप्त हो जायेंगे। अशान्त और परेशान आत्मायें आपकी प्रसन्नता की नज़र से प्रसन्न हो जायेंगी।

10- जैसे बाप का गायन है नज़र से निहाल करने वाले, ऐसे समय प्रमाण अब नज़र से निहाल करने की सेवा करो।

11- अब औरों को माइक बनाओ और आप माइट बन सर्व को सकाश दो। तो आपकी सकाश और उन्हों की वाणी से 9 लाख सहज बन जायेंगे। सेवा में सकाश दे, बुद्धियों को परिवर्तन करने की सेवा एड करो तो सफलता आपके सामने स्वयं झुकेगी।

12- स्वयं को बेहद की सेवा में बिजी रखो तो बेहद का



वैराग्य स्वत: आयेगा। बेहद की सकाश देने से, बेहद में जाने से हद की बातें आपेही छूट जायेंगी।

13- अब हर श्रेष्ठ ब्राह्मण आत्मा द्वारा ब्रह्मा बाप दिखाई दे तब सेवा की गति फास्ट होगी। इसके लिए स्वयं में बापदादा को समाते हुए नज़र से निहाल करने की सेवा करो।

14- अब बेहद के सेवाधारी बनो। अपना समय बेहद की सेवा में लगाओ तो समस्यायें सहज ही भाग जायेगी।

15- समस्याओं के वशीभूत कमजोर आत्मा को शक्ति और गुणों का सहयोग दो, असमर्थ को समर्थी दो तो उनकी दुआयें आपके लिए लिफ्ट बन जायेंगी।

16- अब पुरुषार्थ की मेहनत के बजाए संगम की प्रालब्ध का अनुभव करो, दुआयें लेना सीखो और सिखाओ। प्रसन्न रहना और प्रसन्न करना–यह है दुआयें लेना और दुआयें देना। यह दुआयें सहज ही मायाजीत बना देंगी।

17- कोई कैसा भी हो, ग्लानि करने वाला भी हो तो भी आपके दिल से उस आत्मा के प्रति हर समय दुआयें निकलती रहें – इसका भी कल्याण हो। इसकी भी बुद्धि शान्त हो, आपके शुभ भावना वाले श्रेष्ठ संकल्प उसे परिवर्तन कर देंगे।

18- दो स्लोगन सदा याद रहें -- (1) जो कर्म मैं करूंगा मुझे देख और करेंगे। (2) हुक्मी हुक्म चला रहा है और हम निमित्त बन चल रहे हैं।

19- अभी श्रेष्ठ वायब्रेशन फैलाने की सेवा करो क्योंकि अभी वाणी कम काम करती है, दिल का सहयोग, दिल के वायब्रेशन बहुत जल्दी काम करते हैं।

20- बापदादा को अब पुरानी बातें सुनना अच्छा नहीं लगता। आखिर भी यह कथायें कब तक ? अब इसके समाप्ति के फंक्शन की डेट फिक्स करो।

21- अब साइलेन्स की शक्ति को प्रत्यक्ष करो। सभी



ब्राह्मणों में यह शक्ति है, सिर्फ इस शक्ति को मन से, तन से इमर्ज करो तो बहुत कमाल कर सकते हो।

22- जो भी दिल के उमंग-उत्साह से अच्छे-अच्छे संकल्प उत्पन्न होते हैं उन्हें प्रैक्टिकल में लाने के लिए समाने की शक्ति और कल्याण की भावना को इमर्ज करो। जो संकल्प करते हो उस पर अविनाशी गवर्मेन्ट की अविनाशी स्टैम्प लगाओ।

23- अब अपने पुरुषार्थ का समय दूसरों को सहयोग देने में लगाओ तो आपका पुरुषार्थ स्वत: ही जमा होता जायेगा। अभी सैलवेशन लेना नहीं है, सैलवेशन देना है। सबको नि:स्वार्थ सहयोग और सकाश देने की लहर फैलाओ।

24- परमात्म प्यार आनंदमय झूला है, इस सुखदाई झूले में झूलते सदा परमात्म प्यार में लवलीन रहो तो कोई भी परिस्थिति वा माया की हलचल आ नहीं सकती।

25- बापदादा द्वारा जन्मते ही जो तीसरा नेत्र मिला है -

उस तीसरे नेत्र, ज्वालामुखी नेत्र से माया को शक्तिहीन बना दो, सर्व शक्तियों के आधार से उसे विदाई दो। कभी भी पुरुषार्थ की मेहनत करते-करते थकावट से यह नेत्र बन्द न होने पाये।

26- ब्राह्मण जन्म में सदा उत्साह में रहने और औरों को उत्साह में लाने का उत्सव मनाते रहो। सदा उत्साह दिलाने वाले बोल बोलो, सबको उत्साह भरी कहानी सुनाओ, कोई रोता हुआ आये और उत्साह में नाचता हुआ जाए - यही आपका आक्यूपेशन है।

27- बापदादा इस वर्ष सब बच्चों से यही शुभ आश रखते हैं कि बीती सो बीती कर, निगेटिव और वेस्ट दृष्टिकोण को समाप्त कर दो, कोई की भी व्यर्थ बातें मन और बुद्धि में धारण न हों, अवाइड करो और बापदादा से अवार्ड लो।

28- समय की समीपता के कारण नई-नई बातें, संस्कार,



हिसाब-किताब के काले बादल आयेंगे लेकिन कितने भी काले बादल आयें आप अपनी उड़ती कला की स्टेज पर स्थित रहना तो गहरे काले बादल भी बिखर जायेंगे और आप दृढ़ता के बल से सफल हो जायेंगे।

29- कोई कैसा भी हो आप दिल से सबको स्नेह और शुभ भावना दो, रहम करो। निर्मान बन सबको आगे बढ़ाओ। कारण रूपी निगेटिव को समाधान रूपी पॉजिटिव बनाओ। घबराओ नहीं, माया से निर्भय बनो।

30- कभी किसी को यह सर्टीफिकेट नहीं दो कि "यह तो बदलना ही मुश्किल हैह्न। अगर आपसे परिवर्तन नहीं होता है तो निमित्त आत्माओं तक पहुंचाना - यह आपका फ़र्ज है। फिर खुद लॉ हाथ में नहीं उठाओ।

31- बाप की पालना का रिटर्न है - बाप समान बनकर पालना देना। स्वयं को परिवर्तन कर, स्व-परिवर्तन से सम्बन्ध-सम्पर्क में परिवर्तन लाने के जिम्मेवार, सहयोगी

बनो। स्व कल्याण का श्रेष्ठ प्लैन बनाओ तब विश्व सेवा में सकाश मिल सकेगी।

32- परेशान को शान में स्थित करना - यही आपकी विशेष सेवा है, इसलिए सदा खुश रहने के उत्साह भरे हर्षित चेहरे द्वारा अनेक आत्माओं को हर्षित बनाओ।

33- यह स्लोगन सदा याद रखना कि मुझे बदलना है, मुझे बिगड़ी को बनाना है, दूसरा बिगाड़े, मेरा काम है बनाना। जैसे वह बिगाड़ने में होशियार है, ऐसे आप अपने काम में होशियार बनो।

34- नये युग के, विश्व राज्य के अधिकार की अविनाशी गिफ्ट इस समय बाप द्वारा सभी बच्चों को प्राप्त होती है। सिर्फ इस गिफ्ट को सम्भाल कर रखना, कोई डाकू यह गिफ्ट ले नहीं जाये। अगर अलबेले हो जायेंगे तो डाकू आयेगा इसलिए डबल लाक, गॉड लाक लगाना।

35- इस वर्ष वैरायटी वर्ग की विशेष आत्माओं का एक



विशेष क्वालिटी का ऐसा गुलदस्ता तैयार करो जो माइक का काम करे। तो एक भी वर्ग मिस नहीं हो तब कहा जायेगा विश्व-कल्याणकारी वा सर्व आत्माओं के निमित्त उद्धार करने वाली आत्मायें।

36- यह वर्ष सर्व बातों से मुक्त होने का वर्ष मनाओ। जब यह मुक्ति वर्ष मनायेंगे तब मुक्तिधाम में जायेंगे।

37- बापदादा इस वर्ष सभी को सिर्फ छोटा सा स्लोगन दे रहे हैं – "सफल करो - सफलता लो॥ जो भी आपके पास प्रापर्टी है - समय, संकल्प, श्वांस वा तन-मन-धन सब मैं पन से न्यारे होकर सच्ची दिल से सफल करो, तो जमा होता जायेगा। इन्हें व्यर्थ न गंवाओ, न आइवेल के लिए सम्भालकर रखो।

38- हर सेकण्ड जो भी संकल्प करो, कर्म करो - हर कर्म, हर संकल्प बधाई वाला हो। जो भी मिले वा जो भी साथ में रहते हैं, उन्हों को सदा खुशी की, दिलखुश

मिठाई खिलाते रहना और सदा खुशी में मन से नाचते रहना और सेवा में सभी को खुशी का खजाना भर-भरकर बांटते रहना।

39- यदि समान बनने की तीव्र इच्छा है तो सदा स्नेह के सागर में समा जाओ। यह स्नेह की शक्ति सब कुछ भुला देती है। स्नेह मेहनत से मुक्त बना देता है। स्नेह छत्रछाया बन मायाजीत बना देता है इसलिए और कोई पुरुषार्थ नहीं करो सिर्फ स्नेह के सागर में समाये रहो।

40- बापदादा सभी बच्चों को विशेष 'मेहनत से मुक्त भव' का वरदान देते हैं। कोई भी कार्य करो तो डबल लाइट बनके कार्य करो, तो मेहनत मनोरंजन अनुभव करेंगे। यह संगमयुग मेहनत से मुक्त होने वा मौज में रहने का युग है।

41- स्नेह के लिए कहा जाता है "जहाँ स्नेह है, वहाँ जान भी कुर्बान हो जाती है।ह्न बापदादा जान को कुर्बान



करने के लिए नहीं कहते, पुराना जहान कुर्बान कर दो। इसकी फाइनल डेट फिक्स करो।

42- अभी समय प्रमाण सबको बेहद के वैराग्य वृत्ति में जाना ही होगा, लेकिन बापदादा चाहते हैं कि बच्चों का शिक्षक समय नहीं बनें। आप विश्व के शिक्षक के मास्टर विश्व शिक्षक हो, रचता हो, समय रचना है तो हे रचता आत्मायें, रचना को शिक्षक नहीं बनाओ।

43- जैसे ब्रह्मा बाप ने समय को शिक्षक नहीं बनाया, बेहद का वैराग्य आदि से अन्त तक रहा। एक ही लगन रही -- सेवा, सेवा और सेवा..... और सभी बातों से उपराम रहे। तो आप बच्चे भी अभी समय प्रमाण बेहद की वैराग्य वृत्ति को इमर्ज करो तब सकाश देने की सेवा कर सकेंगे।

44- जैसे साकार में सर्व प्राप्ति के साधन होते हुए, सर्व बच्चों की जिम्मेवारी होते हुए, सरकमस्टांश, समस्यायें

आते हुए बेहद की वैराग्य वृत्ति द्वारा पास विद ऑनर का सर्टीफिकेट ले लिया। ऐसे सूक्ष्म सोने की जंजीरों के जो लगाव हैं उनसे भी मुक्त बनो।

45- अभी समय प्रमाण लगाव-मुक्त बेहद के वैरागी बनो। मन से वैराग्य हो। सम्पूर्णता के दर्पण से सूक्ष्म लगाव को चेक करो। यही ब्रह्मा बाप के प्यार की गिफ्ट ब्रह्मा बाप को दो, सब किनारे छोड़ो। मुक्त हो जाओ।

46- जैसे ब्रह्मा बाप को किसी भी प्रकार के लगाव ने नहीं खींचा, ऐसे अब ऐसा ग्रुप तैयार करो - जो लगाव मुक्त हो। कभी यह संकल्प भी न आये कि मेरी यह ड्युटी है, मेरे बिना कोई कर नहीं सकेगा – इससे भी वैराग्य।

47- सुख स्वरूप बनकर हर एक को दिल से, मर्यादापूर्वक सुख दो। जो मन-वाणी-कर्म से किसी को भी सुख देता है - उसकी मार्क्स ऑटोमेटिक बढ़ती जाती हैं।

48- हमारी पालना करने वाला, पढ़ाई, श्रीमत और वर-



दान देने वाला, हर दिनचर्या में साथ निभाने वाला स्वयं परम आत्मा है, इस भाग्य को स्मृति में रख सदा खुशी में झूलते यही गीत गाते रहो -- वाह मेरा भाग्य!

49- जो सोचते हो, जो कहते हो, अनादि, आदिकाल का जो स्वरूप है उसे इमर्ज करो और हर बात का स्वरूप बनते जाओ। जो सोचो वह स्वरूप अनुभव करो। अनुभवी मूर्त बनो।

50- ब्राह्मण जीवन की नेचुरल नेचर है – गुण स्वरूप, सर्व शक्ति स्वरूप। तो सदा अपने इस स्वरूप की सीट पर सेट रहो, पास्ट जीवन की कोई भी पुरानी नेचर इमर्ज न हो।

51- अब कमजोर बोल से भी मुक्त बनो। हर बोल मधुर, बाप समान, सदा हर आत्मा के प्रति शुभ भावना के बोल– हीरे मोती के समान युक्तियुक्त हों।

52- पास विद आनर बनने के लिए समय प्रमाण सर्व

खजाने जमा कर भरपूर बनो। समय का खजाना, संकल्प का खजाना, बोल का खजाना, ज्ञान धन का खजाना, योग की शक्तियों का खजाना, दिव्य जीवन के सर्व गुणों का खजाना जमा करो। सारे दिन में अपने एक-एक खजाने का एकाउण्ट चेक करो।

53- अभी समय के 'टू लेट' की घण्टी बजने वाली है। अचानक ही आउट होगा -- टू लेट। फिर कितना भी चाहो समय नहीं मिलेगा। इसलिए बापदादा इशारा दे रहा है - 'जमा करो-जमा करो-जमा करो।'

54- दूसरों पर ज्ञान का प्रभाव डालने वाले बनो, सबको बाप पर प्रभावित करान, न कि स्वयं पर। कोई के प्रभाव में प्रभावित नहीं होना। वस्तुओं पर, व्यक्तियों पर प्रभावित होना - यही बहुत बड़ा विघ्न है - अब इस विघ्न को समाप्त करो।

55- बापदादा के राइट हैण्ड बनो, लेफ्ट हैण्ड नहीं।



हिम्मतवान, विघ्न-विनाशक बनकर रहो। हैण्डस बनो, हेडक नहीं।

56- स्व के पुरुषार्थ में कभी विघ्न रूप नहीं बनना। न मन का विघ्न हो, न साथियों का विघ्न हो, न स्टूडेन्टस द्वारा कोई विघ्न हो। स्व निर्विघ्न, सेन्टर निर्विघ्न, साथी निर्विघ्न – यह तीन सर्टीफिकेट इस मुक्ति वर्ष में लेना है।

57- समय प्रमाण अभी सम्पूर्णता का दिवस मनाना ही है, इतना दृढ़ निश्चय का कंगन बांध लो। प्रतिज्ञा करो -- कुछ भी चला जाए लेकिन मुक्ति वर्ष की प्रतिज्ञा न जाए।

58- कोई कैसा भी हो उनके साथ चलने की विधि सीखो। कभी यह नहीं सोचो कि यह बदले तो हम बदलें। कोई पहाड़ समान बात भी सामने आती है तो किनारा कर लो। यदि उस आत्मा के प्रति शुभ भावना है, तो इशारा देकर मन-बुद्धि से खाली रहो।

59- कोई विघ्न रूप बनने वाली आत्मा के प्रति व्यर्थ

संकल्प चलाना भी सोने के लगाव का धागा है। अब स्वयं को इन महीन धागों से भी मुक्त करो। इस वर्ष का अन्तिम फंक्शन मुक्ति वर्ष का फंक्शन हो और इस फंक्शन में स्वयं के सम्पूर्णता की गिफ्ट बापदादा को देना।

60- सेवा में जो भी विघ्न आते हैं, तो आगे का पर्दा विघ्न का होता है, लेकिन पर्दे के अन्दर कल्याण समाया हुआ दृश्य छिपा हुआ होता है। मन्सा-वाचा की शक्ति से विघ्न का पर्दा हटा दो तो अन्दर कल्याण का दृश्य दिखाई दे।

61- कुछ समय अन्तर्मुखता का मौन, मन का मौन रखने का प्रोग्राम बनाओ। मन के व्यर्थ का ट्रैफिक कन्ट्रोल करो। ज्ञान के मनन के साथ शुभ भावना, शुभ कामना के संकल्प, सकाश देने का अभ्यास, यह मन के मौन का या ट्रैफिक कन्ट्रोल का बीच-बीच में दिन मुकरर करो।

62- अब एकान्तवासी बनो, खजानों की एकानामी करो



और एकनामी रहने का लक्ष्य रखो। अमृतवेले अपनी बुद्धि को बाप के हवाले करके बैठो तो बुद्धिवानों की बुद्धि बाप आपकी बुद्धि में नये-नये प्लैन टच करेंगे।

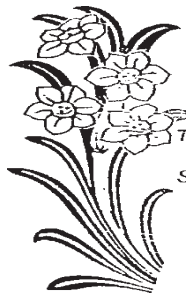

# इस नये वर्ष को 'मुक्ति वर्ष' के रूप में मनाओ

*(प्यारे अव्यक्त बापदादा ने 31-12-97 की मुरली में इस 98 वर्ष को ''मुक्ति वर्ष'' का नाम दिया है, अत: सभी भाई बहिनें इस वर्ष विशेष अपने सम्पन्न स्वरूप द्वारा बेहद की सेवायें करने के लिए सूक्ष्म बन्धनों को चेक कर उनसे मुक्त होने की प्रतिज्ञा करें। इसी लक्ष्य से मुक्त होने की 18 बातें यहाँ हम लिख रहे हैं, जो इस वर्ष में सभी अन्तर्मुखी बन स्वयं की चेकिंग करते हुए दृढ़ संकल्प के साथ सूक्ष्म रस्सियों को समाप्त करें तथा बन्धनमुक्त स्थिति का अनुभव करते हुए बेहद की सेवाओं में सहयोगी बनें)*



**1. तमोगुण से मुक्त**

इस संगमयुगी ब्राह्मण जीवन में रहते हुए तमोगुणी वायुमण्डल, वायब्रेशन, तमोगुणी वृत्तियाँ, माया के वार, इन सबसे मुक्त रहो तब कहेंगे – 'जीवनमुक्त'। अभी के जीवनमुक्त ही भविष्य में जीवन-मुक्त पद प्राप्त करते हैं।

**2.□विकल्पों वा व्यर्थ संकल्पों से मुक्त**

विकर्माजीत स्टेज का अनुभव करने के लिए विकल्पों वा व्यर्थ संकल्पों से मुक्त रहो। हर समय स्वयं को याद और सेवा में बिज़ी रखो, मन को सम्पूर्ण समर्पण कर दो, मन में श्रीमत के सिवाए कोई भी संकल्प उत्पन्न न हो तब व्यर्थ संकल्पों वा विकल्पों से मुक्त रहेंगे।

**3. गृहस्थीपन से मुक्त**

गृहस्थ व्यवहार को सम्भालते हुए, सेवा करते हुए सदा उपराम रहो। याद रखो – सेवा मेरी नहीं बाप ने दी है, तो निर्बन्धन रहेंगे। मेरी गृहस्थी नहीं, 'मैं ट्रस्टी हूँ, बन्धन मुक्त

हूँ,' – ऐसी प्रैक्टिस करो। सूक्ष्म मोह की रस्सियों से भी मुक्त, नष्टोमोहा स्मृति स्वरूप बनो।

**4. पर-मत, पर-चिन्तन, पर-दर्शन चक्र से मुक्त**

श्रीमत प्रमाण स्वचिन्तन, शुभ-चिन्तन और स्वदर्शन चक्र सदा और स्वत: फिरता रहे तो व्यर्थ चक्रों से मुक्त रहेंगे। ड्रामा में हर आत्मा का अपना-अपना पार्ट है इस स्मृति द्वारा इन चक्रों से मुक्त रहो, तो योग-युक्त, जीवन मुक्त चक्रवर्ती बन बाप के साथ विश्व-कल्याण की सेवा में चक्र लगाते रहेंगे।

**5. देह के भान वा कर्मबन्धन से मुक्त**

कर्म करते किसी भी कर्मबन्धन से मुक्त डबल लाइट रूप में रहो। यह शरीर रूपी ड्रेस टाइट न हो। बन्धन मुक्त अर्थात् लूज़ ड्रेस। आर्डर मिला और सेकेण्ड में न्यारे अशरीरी हुए। अन्त समय में अपनी यह देह भी याद न आये, नहीं तो देह के साथ देह के सम्बन्ध, पदार्थ, दुनिया



सब एक के पीछे आ जायेंगे। इसके लिए यह वायदा याद रहे कि ''एक बाप दूसरा न कोई'', तो बन्धनमुक्त हो जायेंगे।

**6. इन्द्रिय रस की आकर्षण से मुक्त**

सदा 'मन्मनाभव' की स्थिति में स्थित रह अलौकिक अतीन्द्रिय सुख वा मनरस का अनुभव करो तो इन्द्रियों के रस अर्थात् विनाशी रस की आकर्षण से मुक्त हो जायेंगे। जो पुरानी दुनिया के कोई भी वस्तु या इन्द्रियों के रस में फंसे हुए रहते वे मनरस का अनुभव नहीं कर सकते। इसलिए इससे मुक्त बनो।

**7. माया की सूक्ष्म जाल से मुक्त**

आजकल सारी दुनिया नाम, मान, शान रूपी माया की जाल में फँसकर तड़प रही है, उन्हें इस जाल से मुक्त करने के लिए पहले स्वयं को इस सूक्ष्म जाल से मुक्त करो। संकल्प और स्वप्न में भी माया का वार न हो। कोई

भी चीज़ आकर्षित न करे, सूक्ष्म आसक्तियों से भी मुक्त– 'इच्छा मात्रम् अविद्या' बनो।

**8. शरीर के, संस्कारों के, स्वभाव के बन्धनों से मुक्त**

जैसे बाप शरीर का लोन लेते हैं, बन्धन में नहीं आते, जब चाहे आयें, जब चाहे चलें जायें, निर्बन्धन हैं। ऐसे आप बच्चे भी शरीर के, संस्कारों के, स्वभाव के बन्धनों से मुक्त बनो। जब चाहें, जैसे चाहें वैसे संस्कार बना लो।

**9. बाह्यमुखता के बन्धनों से मुक्त**

सम्पन्न बनने के लिए बाह्यमुखता के बन्धनों से मुक्त बनो। बाह्यमुखता के रस बाहर से बड़े आकर्षित करते हैं, यह रस ही सूक्ष्म बन्धन बन सफलता की मंजिल से दूर कर देते हैं, इसलिए इसको कैंची लगाओ। व्यर्थ और साधारण बोल नहीं बोलो, धीरे बोलो, मधुर और सुखदाई बोल बोलो; डिस्टर्ब करने वाले बोल से मुक्त वा क्रोध मुक्त बनो।

**10. मैं और मेरे के बन्धन से मुक्त**



मैं और मेरा-पन ही फर्शवासी बनाता है। फरिश्ता बनना अर्थात् मैं और मेरेपन के बन्धन से मुक्त बनना। इस अलौकिक जीवन में 'मैं' और 'मेरा' ही सुनहरी जंजीर है, मैं अच्छा ज्ञानी हूँ, मैं ज्ञानी आत्मा, योगी तू आत्मा हूँ....., मेरी यह विशेषता है, मेरी यह नेचर है, अब इस 'मैं और मेरे पन' से मुक्त बनो।

**11. दैहिक दृष्टि के महापाप से मुक्त**

सदा याद रखो कि मैं पूज्य आत्मा हूँ, पूज्य आत्मा अर्थात् सदा पवित्र। कभी भी दैहिक दृष्टि न हो। इसमें दूसरे को दोषी बनाकर स्वयं को अलबेला मत बनाओ। मन्सा संकल्प में भी किसी देहधारी के झुकाव में आना – लगाव की निशानी है, यह भी महापाप है। तो सेवा के सम्बन्ध में आते हुए इस महापाप से मुक्त रहो।

**12. हदों से मुक्त**

यह विश्व आपके सेवा का स्थान है, इसलिए बेहद में रहो।

हद में नहीं आओ। जितना बेहद का लक्ष्य रखेंगे तो हद के बन्धनों से सहज मुक्त होते जायेंगे। जो अभी संकल्प आता है कि समय नहीं मिलता; इच्छा है लेकिन शरीर नहीं चलता, शक्ति नहीं है.... यह सब बन्धन हैं। जब दृढ़ संकल्प कर लेते कि बेहद की सेवा में आना ही है, लगना ही है तो यह बन्धन सेकेण्ड में समाप्त हो जाते हैं।

### 13. मेहनत और रोने से मुक्त

अपने तकदीर की तस्वीर को देखते हुए कर्म करते भी मेहनत से मुक्त हो, खुशी का अनुभव करो। कभी भी दु:ख के आंसू न आयें। मन में दु:ख की लहर आना माना मन के आंसू। तो न आंखों से आंसू आयें, न मन से। ऐसे रोने से मुक्त बनो। भाग्यवान, खुशनसीब आत्माओं के पास दु:ख की लहर भी नहीं आ सकती।

### 14. आलस्य और अलबेलेपन से मुक्त

ब्राह्मण जीवन में आलस्य और अलबेलापन भी बहुत बड़ा



बन्धन है। ऊंची मंजिल पर पहुँचने के लिए यही विघ्न रूप बनता है, इसलिए आलस्य और अलबेलेपन से भी मुक्त बनो। सदा उमंग उत्साह में रहो तो सुस्ती भाग जायेगी।

### 15. मानसिक चिन्तायें, मानसिक परिस्थितियों के झमेले से मुक्त

क्या, क्यों, कैसे की उलझन में फंसना – यह सबसे बड़ा झमेला है, इससे ही मानसिक चिन्तायें, मानसिक परिस्थितियों में मन उलझ जाता है। इन पहाड़ जैसी परिस्थितियों को हटाने के लिए सिर्फ इस पुराने शरीर के भान को मिटाओ। मन्सा में भी सिम्पल बनों। कभी भी झमेलों में फंसकर लौकिक परिवार में, व्यवहार में, दैवी परिवार में प्राब्लम रूप नहीं बनो।

### 16. अभिमान और अपमान से मुक्त

स्वमान और अभिमान के अन्तर को महीनता से चेक करके बोलचाल, उठने-बैठने में जो अभिमान दिखाई देता है या

अपमान की जो फीलिंग आती है, इस अपमान और अभिमान से भी मुक्त बनो। जब अपनी बुद्धि का अभिमान, अपनी कोई विशेषता का अभिमान, स्वभाव का अभिमान, सेवा का सफ़लता का अभिमान खत्म होगा तब ब्रह्मा बाप समान सम्पूर्ण फरिश्ता बन सकेंगे।

### 17. अप्रसन्नता से मुक्त

ब्राह्मण जीवन की विशेषता 'प्रसन्नता' है, इसलिए चलन और चेहरे से सदा प्रसन्नता की झलक दिखाई दे। चाहे कोई गाली भी देता हो तो भी चेहरे पर दु:ख की लहर न आये। ऐसे अप्रसन्नता मुक्त बनो। सर्व प्राप्तियों की स्मृति सदा प्रसन्नचित्त बना देगी।

### 18. पांच विकार और पांच प्रकृति के तत्वों के बन्धन से मुक्त

अपने आपको देखो – पांच विकार, पांव प्रकृति के तत्वों के बन्धन से कितने परसेन्ट में मुक्त हुए हैं? लिप्त आत्मा



हैं वा मुक्त आत्मा हैं? शरीर का वा देह के सम्बन्ध का, कोई प्रकार का भी सूक्ष्म बन्धन तो नहीं हैं? यह तो फर्ज-अदाई निभा रहे हैं। यह फर्ज-अदाई भी निमित्तमात्र निभानी है, लगाव से नहीं, तब कहेंगे बन्धनमुक्त। ऐसे सर्व सूक्ष्म बन्धनों से मुक्त बन अब अपना 'स्वतंत्रता-दिवस' मनाओ। बाप समान बन बेहद सेवाओं में सहयोगी बनो।

62वीं त्रिमूर्ति शिव जयन्ती के शुभ अवसर पर–

# अव्यक्त शिक्षायें–

# अनमोल रतन

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय
माउण्ट आबू, (राजस्थान)

अनमोल रतन